IMPACT FACTOR IIFS 6.875 ISSN-2278-3911

101

SHODH-PRAKALP

A Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

A Peer Reviewed Refereed Research Journal

www.shodhprakalpresearch.com

Editor
Dr.Sudhir Sharma

Email- shodhprakalp@gmail.com

Volume CI
Oct-Dec, 2022

आर. एन. आई. पंजीयन क्रमांक : MPHIN/1997/2224

पच्चीस वर्षों से नियमित प्रकाशित

Scanned with OKEN Scanner

IMPACT FACTOR IIFS-6.875

ISSN 2278-3911

अंक : 101 वर्ष : 29 संख्या : 4 अक्टूबर-दिसंबर,2022

SHODH-PRAKALP

A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

www.shodh-prakalp.com

Editor
DR. SUDHIR SHARMA

संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर जिला- दुर्ग (छ.ग.)

■ शोध एवं अनुसंधान विकास केंद्र, रायपुर का प्रकाशन
■ RESEARCH & RESEARCH DEVELOPMENT CENTRE, RAIPUR

■ अंतरराष्ट्रीय मानक मान्यता प्राप्त बहुप्रसारित भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में मान्य शोधपत्रिका

Volume CI Number 4 Oct-Dec. 2022

U.G.C. NO. 63535(OLD LIST) email :shodhprakalp@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

शोध-प्रकल्प
SHODH-PRAKALP
A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal

राष्ट्रीय संपादन मंडल एवं समीक्षक ——— National Edtiorial & Refries Board

मुख्य परामशर्दाता एवं संरक्षक
डॉ. चित्तरंजन कर
पूर्व प्रोफेसर, साहित्य एवं
भाषा अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.,
रायपुर (छ.ग.)

विशेष परामशर्दाता
नंदकिशोर तिवारी
पूर्व कुलसचिव
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.)

इतिहास–पुरातत्व
डॉ. योगेश्वर तिवारी
प्रोफेसर, इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद (उ.प्र.)

इतिहास–संस्कृति
डॉ. प्रदीप शुक्ल
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
गुरू घासीदास वि.वि.,
बिलासपुर (छ.ग.)

कृषि एवं पयार्वरण
डॉ. के. के. श्रीवास्तव
प्राध्यापक,
इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

विज्ञान
डॉ. शम्स परवेज
प्रोफेसर, रसायन अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

भाषाविज्ञान
डॉ. श्रीमती शैल शर्मा
प्रोफेसर,
साहित्य एवं भाषा अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.,
रायपुर (छ.ग.)

हिन्दी

डॉ. अरूण कुमार होता
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
पं. बंग विश्वविद्यालय,
कोलकाता (पं.बंगाल)

भूगोल
डॉ. श्रीमती जेड. टी. खान
पूर्व, प्रोफेसर
भूगोल अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

पुरातत्व एवं इतिहास
डॉ. आभा पाल
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
इतिहास अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर (छ.ग.)

अँग्रेज़ी

डॉ. एम. एस. मिश्रा
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
अंग्रेजी विभाग,
कलिंगा विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

डॉ. कविता वर्मा
सहायक प्राध्यापक
कल्याण स्नातकोत्तर महा.
भिलाई नगर, दुर्ग (छ.ग.)

दर्शनशास्त्र
डॉ. भगवंत सिंह,
पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि.,
रायपुर (छ.ग.)

डॉ. सतीश मोदी
एसोसिएट प्रोफेसर
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय
वि.वि. अमरकंटक (म.प्र.)
राजनीति विज्ञान

डॉ. सुभाष चंद्राकर
वरिष्ठ प्राध्यापक
दुर्गा महाविद्यालय,रायपुर (छ.ग.)
शिक्षा संकाय

डॉ. चन्द्रशेखर वझलवार
अध्यक्ष, शिक्षाविज्ञान
गुरू घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर (छ.ग.)
आयुर्वेद संकाय

डॉ. रूपेन्द्र चंद्राकर
रीडर आयुर्वेद सहिता
एवं सिद्धांत विभाग
शास. आयुर्वेद महाविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

डॉ. ओ. पी. द्विवेदी
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
शरीर रचना विभाग
शास. आयुर्वेद महाविद्यालय
रीवा (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

IIFS IMPACT FACTOR

CERTIFICATE OF ACKNOWLEDGEMENT

This is certified that our evaluator evaluated the Journal **"Shodh Prakalp"** E/P- ISSN "**2278-3911**" and the journal got the Impact Factor "**6.875**" and the process adopted for the evaluation of the journal is blind.

This Impact Factor/Evaluation is Valid up to **6/8/2023** .

Team IIFS
INDIA

Visit Us:

Scanned with OKEN Scanner

SHODH-PRAKALP
A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal ISSN 2278-3911

अंक : 101 वर्ष : 29 संख्या :4 अक्टूबर-दिसंबर, 2022

INDEX

1.	हिंदी की वैज्ञानिकता और लोकभाषाओं का अन्तर्सम्बन्ध	डॉ. सीमा चन्द्राकर डॉ. वीरेन्द्र कुमार साहू	07
2.	कौमारभृत्य (बालरोग) में भेल संहिता का योगदान	प्रोफे. (डॉ.) जी.एस. बघेल डॉ. लवकेश चंद्रवंशी डॉ. सत्यवती राठिया	13
3.	भारत में बालिकाओं की शिक्षा : स्थिति एवं चुनौतियाँ	डॉ. दीपिका चटर्जी	17
4.	स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत संवर्धन में सागर एवं दमोह मंडलों में प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं, आयोजित संगोष्ठियों, नाट्यों तथा दूरदर्शन व रेडिओ कार्यक्रमों का योगदान (1947 से 2006 तक)	श्रीमती राखी गुरु	21
5.	'उपभोक्तावादी संस्कृति' में बिखरते 'पारिवारिक–मूल्य': 'दौड़' उपन्यास के सन्दर्भ में	डॉ. फिरोज आलम	27
6.	राष्ट्रभाषा हिन्दी : वर्तमान संदर्भ	शिव कैलाश	30
7.	पर्यावरण संरक्षण मे महिलाओं की भूमिका	डॉ. कुबेर सिंह गुरूपंच, चेतना गजपाल	34
8.	Employee Engagement w.r.t Telecom Services In Chhatisgarh, India	Akriti Sharma	38
10.	हिन्दी काव्य परंपरा में प्रतिरोध	कुणाल भारती	47
11.	जनपक्षधरता के कवि : सर्वेश्वर और धूमिल	अनुज कुमार, डॉ. चंदन कुमार	54
12.	भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य की भूमिका	डॉ. विद्या भूषण	62
13.	शिवमूर्ति और उनका 'आखरी छलांग' : एक मूल्यांकन	रुचि कुमारी	70
14.	भारत में लोक उपक्रमों के प्रकाशित खाते : सैद्धांतिक अध्ययन	डॉ सुनील कुमार गुप्ता	74

टीप : शोध-प्रकल्प में प्रकाशित शोधपत्रों और आलेखों में व्यक्त विचार या तथ्यों से संपादक /संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है उनके लिए लेखक ही उत्तरदायी हैं। शोधपत्रों में पुनरावृत्ति अथवा मौलिकता के संबंध में लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

Scanned with OKEN Scanner

IMPACT FACTOR IIFS-6.875 U.G.C. NO. 63535(OLD LIST)

www.shodh-prakalpresearch.com

SHODH-PRAKALP
A Quarterly Peer Reviewed Refereed Research Journal

ISSN 2278-3911

'उपभोक्तावादी संस्कृति' में बिखरते 'पारिवारिक–मूल्य': 'दौड़' उपन्यास के सन्दर्भ में

डॉ. फिरोज आलम
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर, झारखंड

'भूमंडलीकरण' और 'बाजारवाद' ने जिन मूल्यों को सबसे ज्यादा प्रभावित किया उनमें 'पारिवारिक–मूल्य', 'वैवाहिक–मूल्य', पति–पत्नी के संबंध आदि हैं। हर तरफ एक दौड़ लगी है और इस दौड़ में जो पीछे छूटते जा रहे हैं, वह है मानवीय–संवेदनाएं और मानवीय–मूल्य। 'ममता कालिया' जी का उपन्यास 'दौड़' इन्हीं 'मानवीय–मूल्य' और 'मानवीय–संवेदनाओं' की तलाश करता है।

आज 'उपभोक्तावादी' संस्कृति हमारे समाज पर हावी है। इस 'भूमंडलीकरण' और 'बाजारवाद' ने बेशक हमारे लिए रोजगार के नए अवसर तो खोल दिए, लेकिन इसके प्रभाव में हम मानवीय धरातल पर उतने ही पिछड़ते भी चले जा रहे हैं।

'भूमंडलीकरण' और 'बाजारवाद' ने जिन मूल्यों को सबसे ज्यादा प्रभावित किया उनमें 'पारिवारिक–मूल्य', 'वैवाहिक–मूल्य', पति–पत्नी के संबंध आदि हैं। हर तरफ एक दौड़ लगी है और इस दौड़ में जो पीछे छूटते जा रहे हैं, वह है मानवीय–संवेदनाएं और मानवीय–मूल्य। 'ममता कालिया' जी का उपन्यास 'दौड़' इन्हीं 'मानवीय–मूल्य' और 'मानवीय–संवेदनाओं' की तलाश करता है।

'ममता कालिया' का लघु उपन्यास 'दौड़' सन्–(2000) ई. में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास के माध्यम से 'ममता कालिया' जी ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि आज 'उपभोक्तावादी' संस्कृति के इस 'दौड़' में किस तरह परिवार और समाज में मानवीय–मूल्यों का ह्रास हो रहा है। 'मानवीय–संवेदनाएं' शून्य होती जा रही हैं। 'पवन', 'रेखा', 'सघन', 'राकेश', 'रोजविंदर', 'दीपेंद्र', 'स्टैला' आदि वे पात्र हैं जो इस 'बाजारवाद' और 'उपभोक्तावादी' संस्कृति के पीछे 'दौड़' रहे हैं। यह वे पात्र हैं जो व्यवसाय जगत के प्रभाव और परिस्थितियों में घिरकर यथास्थिति बनकर रह गए हैं। कैरियर बनाने की दौड़ में सबसे ज्यादा बदलाव मानवीय संबंधों में आया है। जहाँ रिश्तों से अधिक कैरियर को महत्व दिया जाने लगा। स्वयं 'ममता कालिया' जी इस उपन्यास में लिखतीं हैं– "भूमंडलीकरण और उत्तर औद्योगिक समाज ने इक्कीसवीं सदी में युवा वर्ग के सामने एकदम नए ढंग के रोजगार और नौकरी के रास्ते खोल दिए हैं। एक समय था जब हर विद्यार्थी का एक ही सपना था–पढ़–लिखकर प्रशासनिक सेवा में चुना जाना। कुछ सहपाठियों की पारम्परिक महत्वाकांक्षाएं थीं। इनके अन्तर्गत डॉक्टर की बेटी डॉक्टर और इंजीनियर का बेटा इंजीनियर बनना चाहता था। तब बाज़ार इतना आकर्षक, विशाल और व्यापक नहीं हुआ था कि युवा–वर्ग इसे अपने सपनों में शामिल करे। वर्तमान सदी में समस्त अन्यवाद के साथ एक नया वाद आरंभ हो गया, बाजारवाद और उपभोक्तावाद। इसके अन्तर्गत, बीसवीं सदी का सीधा–सादा खरीददार एक चतुर उपभोक्ता बन गया।जिन युवा– प्रतिभाओं ने यह कमान सँभाली उन्होंने कार्य क्षेत्र में तो खूब कामयाबी पायी पर सम्बन्धों के समीकरण उनसे कहीं ज्यादा खींच गए, तो कहीं ढीले पड़ गए। 'दौड़' इन प्रभावों और तनावों की पहचान कराता है।"[1]

इसमें कोई दो राय नहीं है कि कैरियर बनाना बहुत जरूरी है। हर माता–पिता का यही सपना होता है कि उसके बच्चे का अच्छा कैरियर हो, अच्छा भविष्य हो, लेकिन कैरियर बनाने के लिए मानवीय संबंधों को पीछे छोड़ देना कहाँ तक उचित है। खासकर उन संबंधों को जिनसे हमारी स्वयं की पहचान है। इस उपन्यास में 'पवन' ऐसा ही पात्र है 'पवन' के माता–पिता यही चाहते थे कि वह 'एम.बी.ए.' करे और जीवन में सफलता पाए, अपना कैरियर बनाए। उनका यह सपना पूरा तो हो जाता है, लेकिन उन्हें यह नहीं पता होता कि जिस दिशा में वह कैरियर बना रहा है वह इतना प्रभावी होगा कि पारिवारिक संबंधों और संबंधों की भावना को ही नष्टप्राय कर देगा। उपन्यास की पूरी कथा 'पवन', 'रेखा', 'सघन', 'राकेश' और 'स्टैला' के इर्द–गिर्द घूमती है। 'राकेश' और 'रेखा' 'पवन' के माता पिता हैं। पिता संपादक हैं और मां शिक्षक दोनों चाहते हैं कि 'पवन' अपने शहर में ही नौकरी करे। इस तरह बेटे का कैरियर भी बनेगा और माता–पिता भी उसके साथ रहेंगे।

Scanned with OKEN Scanner

लेकिन 'पवन' इस बात से इंकार करता है और अपने माता–पिता को छोड़कर शहर से दूर नौकरी करने चला जाता है। वह अपने पिता से कहता है– "पापा मेरे लिए शहर महत्वपूर्ण नहीं है, कैरियर है। अब कलकत्ते को ही लीजिए। कहने को महानगर है पर मार्केटिंग की दृष्टि से एकदम लद्धड़। कलकत्ता में प्रड्यूसर्स का मार्केट है कंज्यूमर्स का नहीं। मैं ऐसे शहर में रहना चाहता हूँ जहाँ कल्चर हो न हो, कंज्यूमर कल्चर जरूर हो। मुझे संस्कृति नहीं उपभोक्ता संस्कृति चाहिए, तभी मैं कामयाब रहूँगा।"[2]

आज समय की यह मांग है कि कामयाबी कैरियर सेट से ही मानी और समझी जाती है, लेकिन उन संस्कृति का क्या, उन आदर्शों और मूल्यों का क्या, जिसमें हमारी जड़ें हैं। जिसने हमें सींचा है। यह ठीक है कि कैरियर भी उतना ही महत्वपूर्ण है लेकिन सिर्फ कैरियर, यह कहां तक उचित है। आज 'ग्लोबलाइजेशन' के इस दौर में हमने दुनिया को मुट्ठी में तो कर लिया है लेकिन जो चीज मुट्ठी से बाहर रह गयी वह 'मानवीय–संवेदना' एवं 'मानवीय–मूल्य' है।

'पवन' की सोच में आदर्श से ज्यादा यथार्थ दिखाई देता है। वह छुट्टियों में जब भी घर कुछ दिन के लिए रहने आता है उसका यही रूप दिखाई देता है। माता–पिता के विचार उसे जरा भी अच्छे नहीं लगते। वह उनकी हर बात को सिरे से नकार देता है।

'पवन' जिस दिशा में आगे बढ़ता है वहां 'एथिक्स' नहीं बल्कि 'प्रोफेशनल एथिक्स' अधिक है। यह उसी बाजारवाद की देन है जिसका परिणाम यह है कि आज की युवा पीढ़ी अपने कर्तव्यों, मूल्यों एवं मान्यताओं को भूलकर बाजार के नीति–नियमों जैसे ही संचालित हो रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी अगर ऐसी सोच रखेंगे तो समाज का क्या होगा। इस पर चिंता व्यक्त करते हुए लेखिका 'पवन' के पिता 'राकेश' के माध्यम से कहतीं हैं– "तुम समझ नहीं रही हो। पवन के बहाने एक पूरी युवा पीढ़ी को पहचानो। ये अपनी जड़ों से कटकर जीने वाले लड़के समाज की कैसी तस्वीर तैयार करेंगे।"[3]

'उपभोक्तावादी' संस्कृति ने 'पारिवारिक–मूल्यों' का भी बाजारीकरण कर दिया है या यूं कहें कि माता–पिता और संतान के रिश्ते में भी कहीं न कहीं बाजारीकरण ने अपना रूप ले लिया है। 'पवन' अपने माता–पिता से पराए व्यक्ति जैसा व्यवहार करता है। उसका यह व्यवहार उनकी मां 'रेखा' को परेशान करती है। वह हर बात पर अपने माता–पिता से तर्क करता है। छुट्टियों पर जब भी वह अपने घर आता है उसका यही व्यवहार दिखाई देता है। एक बार छुट्टियों पर जब वह घर आया हुआ होता है और मौसी के यहां से जब कपड़े धुल कर आते हैं और पवन उसे ज्यादा पैसे दे देता है तब उसकी माँ उसे यही कहती है कि उसे ज्यादा पैसे नहीं देने चाहिए थे क्योंकि इन लोगों को ज्यादा पैसे देने से यह लोग सिर पर चढ़ जाते हैं। वह पवन से सिर्फ इतना ही कहती है कि– "टूरिस्ट की तरह तुमने उसे मनमाने पैसे दे दिए, वह अपना रेट बढ़ा देगा तो रोज भुगतना तो मुझे पड़ेगा।"[4] लेकिन इस छोटी सी बात पर 'पवन' हंगामा खड़ा कर देता है यहां तक कि अपनी मां को ताने भी देता है क्योंकि नौकरी लग जाने से उसका वर्चस्व बढ़ गया है। उसके आदेश की कोई अवहेलना नहीं कर सकता। इसीलिए उसे मां की बात बुरी लगती है। आखिरकार यह 'बाजारीकरण' का प्रभाव नहीं तो और क्या है कि एक मां का अपने बेटे को दिया गया उपदेश उसे ताने के जैसा लगता है। मां अपने संतान की भविष्य के लिए क्या कुछ नहीं करतीं। लेकिन वही संतान जब कुछ बन जाता है तो मां की उपदेश भरी बातें उसे चुभने लगती है। मां की तरफ से उसके जन्मदिन पर जब ग्रीटिंग कार्ड नहीं भेजा जाता तब भी वह अपनी मां को ताने ही देता है जबकि जन्मदिन पर ग्रीटिंग कार्ड पराए को ही दिया जाता है। अपने संतान के लिए तो माँ उसकी दीर्घायु के लिए पूजा अर्चना करती है। पवन अपनी माँ से कहता है– "मां मेरा जन्मदिन इस बार यों ही निकल गया आपने फोन किया पर कोई ग्रीटिंग कार्ड नहीं भेजा।"[5] इस बात पर उनकी माँ यही कहती है– "बेटे ग्रीटिंग कार्ड तो बाहरी लोगों को भेजा जाता है। तुम्हें पता है तुम्हारा जन्मदिन हम कैसे मनाते हैं। हमेशा की तरह मैं मन्दिर गई, स्कूल में सबको मिठाई खिलाई, रात को तुम्हें फोन किया।"[6] लेकिन पवन ताने देते हुए कहता है– "मेरे सब कलिग्स हँसी उड़ा रहे थे कि तुम्हारे घर से कोई ग्रीटिंग कार्ड नहीं आया।"[7] बेटे की यह बात सुनकर मां को यही लगता है कि उसे अपने बेटे से प्यार करने के नए तरीके सीखने होंगे। यह आज की तस्वीर है जहां संतान नहीं माता–पिता को उनके लिए बदलना पड़ता है। यह आज का यथार्थ है कि एक मां को अपने संतान से प्यार करने के नए तौर तरीके सीखने होंगे। 'पवन' का अपने पिता से भी विचार मेल नहीं खाता और हर बात पर वह उससे तर्क ही करता है। 'पवन' और उसके पिता के विचारों में नए और पुराने के मध्य संघर्ष दिखाई देता है। यही संघर्ष आज पुरानी और नई पीढ़ी के मध्य भी दिखाई देती है। 'राकेश' जब 'पवन' को अध्यात्म और संवेदना की बातें समझाता है तब उसका विचार उसे आहत ही करता है– "केवल अर्थशास्त्र से जीवन नहीं कटता पवन, उसमें थोड़ा दर्शन, और अध्यात्म और ढेर–सी संवेदना भी पनपनी चाहिए।"[8] इस पर पवन कहता है कि– "आपने जीवन में मुझे बहुत कंफ्यूज किया है। पर सरल मार्ग में एकदम सीधी सच्ची यथार्थवादी बातें हैं।"[9] यह आज की युवा पीढ़ी है

Scanned with OKEN Scanner

कि जिसके व्यक्तित्व में भौतिकतावाद, अध्यात्म और यथार्थवाद की त्रिपथगा बहती है।

आज की युवा पीढ़ी आधुनिकता की चकाचौंध से प्रभावित है। वह अपने तरीके से अपनी जिंदगी को जीना चाहते हैं। यहां तक कि शादी विवाह भी वह अपनी मर्जी से ही करना पसंद करते हैं और यह उचित भी है। लेकिन विवाह जैसे पवित्र बंधन में बंधने से पहले उन्हें या जरूर सोचना चाहिए कि जिस पवित्र बंधन में वे बंधने जा रहे हैं उसमें माता–पिता का भी आशीर्वाद होना जरूरी है। 'पवन' 'स्टैला' से शादी करने की बात जब अपनी मां से करता है तो उसकी मां को बड़ा दुख होता है। वह यही सोचती है कि जिस बेटे को पढ़ा लिखा कर इस लायक बनाया उसने शादी जैसे इतने बड़े फैसले वह खुद ही कर लिया। 'स्टैला' आधुनिक विचारों की स्त्री है, और भविष्य में एक कामयाब बिजनेसमैन बनना चाहती है। वह हर चीज में नफा–नुकसान देखती है। यहां तक कि शादी विवाह को भी वह एक डील समझती है। जिसमें कितना फायदा और कितना नुकसान है। मां को 'स्टैला' पसंद नहीं है। लेकिन 'पवन' को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।वह भी शादी जैसे गंभीर रिश्ते को एक डील ही समझता है क्योंकि मार्केट की दुनिया में इस डील का बहुत बड़ा महत्व है। और वह 'स्टैला' से शादी कर लेता है। इससे उसके माता–पिता को बहुत दुख भी पहुंचता है। शादी के बाद 'पवन' और 'स्टैला' कुछ ही दिन साथ रहते हैं। क्योंकि 'पवन' का चयन चेन्नई में किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में हो जाता है और 'स्टैला' बिजनेस की जिम्मेदारी संभालने अहमदाबाद चली जाती है। माता–पिता को जब यह खबर लगती है तब वह 'पवन' को विवाह के वचनों का वास्ता देकर उसे समझाते हुए कहते हैं कि बेटा शादी के बाद पति–पत्नी को ऐसे अलग नहीं रहना चाहिए। दाम्पत्य जीवन का अपना एक महत्व होता है। इस पर 'पवन' कहता है– "पापा, आप भारी–भरकम शब्दों से हमारा रिश्ता बोझिल बना रहे हैं। मैं अपना कैरियर,अपनी आजादी कभी नहीं छोड़ूँगा।"[10]

यहां यह बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है कि 'पवन' के लिए कैरियर ही सब कुछ है। दाम्पत्य जीवन उसके लिए कोई महत्व नहीं रखता है। कुछ दिनों के बाद 'राकेश' का छोटा बेटा 'सघन' भी 'पवन' की तरह विदेश में नौकरी करने चला जाता है। और इस तरह दोनों माता–पिता बुढ़ापे में अकेले रह जाते हैं। आज हमारे समाज में इसी प्रकार के दृश्य दिखाई देते हैं। माता–पिता को संतान से यही उम्मीद लगी रहती है कि बुढ़ापे में वे उनका सहारा बनेंगे लेकिन बुढ़ापे तक पहुंचते–पहुंचते परिस्थितियां कुछ और ही हो जाती है। आज महानगरों में यही स्थिति है। माता–पिता बुढ़ापे में अकेले ही रहते हैं और बच्चे बाहर अपना कैरियर बनाने में व्यस्त। इस यथार्थ को बतलाते हुए लेखिका कहती हैं– "अकेलेपन के साथ सबसे जानलेवा होते हैं उदासी और पराजय बोध बच्चों की सफलता इनके जीवन में सन्नाटा बुन रही थी।"[11]

यही हाल 'रेखा' और 'राकेश' की भी हो जाती है। वह पल–पल अपने बच्चों को याद करती रहती हैं। इस 'बाजारवाद' और 'उपभोक्तावादी' संस्कृति ने मनुष्य को मशीन बना दिया है। इसने पूरे समाज को अपने अनुसार ढाल लिया है। नए–नए ऑफर और एशो आराम की जिंदगी युवा पीढ़ी को अपनी तरफ खींच रही है और वे इतने दूर होते चले जा रहें हैं कि माता–पिता के देहांत हो जाने पर भी नहीं पहुँच पाते। 'सिद्धार्थ' ऐसा ही पात्र है। वह विदेश में नौकरी करता है वहां की सुख–सुविधाओं को देखते हुए वहीं बस जाता है। उनके पिता का जब देहांत होता है और उसे दाह–संस्कार के लिए जब बुलाया जाता है वह नहीं आता और कहता है– "हम सब तो आज लुट गए ममा। लोग बता रहे हैं मेरे आने तक डैडी को रखा नहीं जा सकता। आप ऐसा कीजिए, इस काम के लिए किसी को बेटा बनाकर दाह–संस्कार करवाइए। मेरे लिए तेरह दिन रुकना मुश्किल होगा।"[12] यह आज की स्थिति है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'ममता कालिया' का उपन्यास 'दौड़' 'बाजारवाद' और उपभोक्तावादी संस्कृति से प्रभावित आज के मनुष्य की कहानी है। जो इस दौड़ में 'संवेदनहीन' होते जा रहे हैं। आवश्यकता है उन मानवीय–संबंधों और मानवीय–मूल्यों को बनाए रखने की।

संदर्भ–

1. 'दौड़', 'ममता कालिया', 'वाणी प्रकाशन', 'दरियागंज', 'नयी दिल्ली', 'छब्बीसवाँ संस्करण', 2022, पृ. 05
2. वही, पृ. 40
3. वही, पृ. 42
4. वही, पृ. 42
5. वही, पृ. 43
6. वही, पृ. 43
7. वही, पृ. 43
8. वही, पृ. 45
9. वही, पृ. 46
10. वही, पृ. 65
11. वही, पृ. 68
12. वही, पृ. 81

■■

Scanned with OKEN Scanner